अक्षौहिणी सेना, महाभारत का युद्ध, चतुर्युग और मूलांक 09 के आभासी अन्तर्सम्बन्ध

महेन्द्र पाठक
कार्यक्रम अधिशाषी, आकाशवाणी, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
drpathakmp@gmail.com

प्राप्त तिथि–09.05.2015, स्वीकृत तिथि–09.09.2015

संख्याओं 18, 108, 1008, ... को भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व दिया गया है। जिस प्रकार सात स्वरों सा, रे, ग, म, प, ध, नि, में से चुने गए एकाधिक सुरों के विस्तार और संयोजन से ही रागों का निर्माण होता है। उसी तरह से समस्त संख्यायें कुल दस संख्याकों 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 में से किसी एक या एकाधिक के क्रमचय व संचय से बनती हैं। किसी भी संख्या के इकाई, दहाई, सैकड़ा,... आदि स्थानों पर स्थित सभी संख्याकों को जोड़ने पर जो संख्यांक प्राप्त होता है उसे मूलांक कहते हैं। उदाहरण के लिए संख्या 2,147,807 का मूलांक निकालते हैं। इस संख्या के सभी अंकों को जोड़ने पर 29 प्राप्त होता है। 29 दो अंको की संख्या है इसलिए दो और नौ को फिर आपस में जोड़ा जायेगा तो 11 प्राप्त होता है। अब चूंकि 11 भी दो अंको की संख्या है। अतः एक फिर प्राप्त संख्या 11 के दोनो अंको को जोड़ा जायेगा तो 2 प्राप्त होता है। अन्ततः 2,147,807 का मूलांक 2 प्राप्त होता है।

इस प्रकार अंकगणितीय दृष्टि से 18, 108, 1008, ... आदि सभी संख्याओं का मूलांक 9 है। आध्यात्मिक, दार्शनिक और धार्मिक दृष्टि से इन विशेष संख्याओं का क्या महत्व है? इस संदर्भ में विद्वानों के विचार भिन्न हो सकते हैं पर अंकगणितीय दृष्टि से इन सभी संख्याओं में एक साम्य है कि इन सभी का मूलांक 9 है।

अब अक्षौहिणी सेना की संरचना पर दृष्टि डालते हैं। महाभारत के अनुसार सेना का विभाजन निम्नवत् किया गया है–

पत्ति–1 रथ, 1 हाथी, 5 पैदल, एवं 3 घोड़े
उपत्ति = 1 सेनामुख
3 सेनामुख = 1 गुल्म
3 गुल्म = 1 गण
3 गण = 1 वाहिनी
3 वाहिनी = 1 पृतना
3 पृतना = 1 चमू
3 चमू = 1 अनीकिनी
10 अनीकिनी = 1 अक्षौहिणी

इस प्रकार उपर्युक्त गणनानुसार एक अक्षौहिणी सेना में 21,870 रथ, 21,870 हाथी, 65,610 घोड़े तथा 109,350 पैदल सैनिक होते थे। यदि हाथियों, घोड़ों तथा पैदल सैनिकों की संख्याओं के सभी अंकों को आपस में जोड़ा जाये तो उन सभी का योग 18(मूलांक 9) ही आता है।

रथ	21,870	2+1+8+7+0	= 18 (1+8 = 9)
हाथी	21,870	2+1+8+7+0	= 18 (1+8 = 9)
घोड़े	65,610	6+5+6+1+0	= 18 (1+8 = 9)
पैदल सैनिक	109,350	1+0+9+3+5+0	= 18 (1+8 = 9)

यदि हम महाभारत के युद्ध में कौरवों और पाण्डवों की सेनाओं के गठन को देखें तो अंक 18 की आवृति अनेक बार होती है। महाभारत के युद्ध में कुल 18 अक्षौहिणी सेनाओं(कौरवों की ओर से 11 अक्षौहिणी तथा पाण्डवों की ओर से 07 अक्षौहिणी सेना) ने भाग लिया और महाभारत का युद्ध भी कुल 18 दिन तक ही चला। महाभारत के युद्ध के पूर्व योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये उपदेशों को महर्षि वेद व्यास जी ने श्रीमद्भगवतगीता के रूप में कुल 18 अध्यायों में वर्णित किया। अपने ग्रन्थ महाभारत को भी महर्षि व्यास ने कुल 18 पर्वों में विभक्त किया है। इतनी बार संख्या 18 की आवृत्ति अनायास तो नहीं होना चाहिए। इसे मात्र संयोग भी नहीं कहा जा सकता है। संख्या 18 की आवृति यहीं समाप्त नहीं हो जाती है, कौरवों और पाण्डवों की सैन्य शक्ति का अलग–अलग विश्लेषण करने पर भी निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं–

कौरव सेना (11 अक्षौहिणी)

1. रथ 21,870 × 11 = 240570
2. हाथी 21,870 × 11 = 240570
   संख्या 240,570 के अंको का योग
   2+4+0+5+7+0 = 18 (1+8=9)
3. घोड़े 65,610 × 11 = 721,710
   संख्या 721,710 के अंको का योग
   7+2+1+7+1+0 = 18 (1+8=9)
4. पैदल सैनिक 109350 × 11 = 1,202,850
   संख्या 1,202,850 के अंको का योग
   1+2+0+2+8+5+0 = 18 (1+8=9)

पाण्डव सेना(7 अक्षौहिणी)

1. रथ 21,870 × 7 = 153090
2. हाथी 21,870 × 7 = 153090
   संख्या 153090 के अंको का योग
   1+5+3+0+9+0= 18 (1+8=9)
3. घोड़े 65,610 × 7 = 459270
   संख्या 459270 के अंको का योग
   4+5+9+2+7+0 = 27 (2+7=9)
4. पैदल सैनिक 109350 × 7 = 765450
   संख्या 765450 के अंको का योग
   7+6+5+4+5+0= 27 (2+7=9)

उपर्युक्त पद्धति से ही यदि कुल 18 अक्षौहिणी सेना के रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदल सैनिकों की संख्यायें लिखी जायें तो वे क्रमशः 3,93,660, 3,93,660, 1,18,0980, 1,96,8300 प्राप्त होती हैं। इन संख्याओं के अंकों को योग 27(मूलांक 9) आता है। यहाँ पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि वहीं संयुक्त सेनाओं के संदर्भ में यह योग 27 आता है। जबकि पाण्डव सेना के संदर्भ में रथों और हाथियों का योग 18 आता है। लेकिन घोड़ों और पैदल सैनिकों की संख्याओं का योग 27 आता है। किन्तु सभी का मूलांक 9 ही आता है।

इसी प्रकार यदि हम मनुस्मृति में वर्णित चतुर्युग की गणना पर ध्यान दें तो प्रत्येक संख्या का मूलांक 09 ही प्राप्त होता है।

1. कल्प 1,008 चतुर्युग = (1+0+0+8= 9)
   1008 × 12000 = 12,096,000 दिव्य वर्ष(1+2+0+9+6+0+0+0 = 18
   12096000 दिव्य वर्ष × 360 = 4,354,560,000 मानव वर्ष (4+3+5+4+5+6= 27)
   ब्रह्मा एक अहोरात्र = 8,640,000,000 मानव वर्ष
   (अर्थात एक दिन व एक रात) (8+6+4=18)

उपर्युक्त सभी प्रक्रियाओं में मूलांक 09 ही प्राप्त होना महज संयोग है या इसके पीछे कोई गूढ रहस्य है। इसकी पृष्ठभूमि में जाकर सभी दृष्टियों से अन्तर्विषयी गहन शोध करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में विद्वानों के विचार आमंत्रित हैं।

संदर्भ

1. भारत(किताब–उल–हिन्द) अलरूनी नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।